प्रातः क्लास 30-5-68 ओमशान्ति पिताश्री

ओमशान्ति। बाप बच्चों से पूछते हैं कि आत्मा सुनती है या शरीर सुनता है? (आत्मा) आत्मा सुनेंगी जरूर शरीर द्वारा। बच्चे लिखते भी हैं ऐसे फ्लाने की आत्मा बाप-दादा को याद करती है, फ्लाने की आत्मा आज फ्लाने जगह जाती है। यह जैसे आदम पड़ जाती है। हम आत्मा हैं क्यों कि बच्चों को आत्म-अभिमानी बनना है। जहां भी देखते हो जानते हो आत्मा और शरीर है। और इन में है दो आत्माएं और एक शरीर। एक आत्मा को परमात्मा, एक को आत्मा कहते हैं। परमात्मा खुद कहते हैं मैं इस शरीर में जिसमें इनकी आत्मा भी रहती है मैं प्रवेश करता हूं। शरीर बिगर तो आत्मा रह न सके। अभी बाप अपने को कहते हैं अपने को भी तुम आत्मा समझो। अपने को आत्मा समझेंगे तो बाप को याद करेंगे। और पवित्र बनेंगे शान्तिधाम जावेंगे। फिर दैवी गुण भी जितना धारण करेंगे और करावेंगे, स्वदर्शनचक्रधारी बन कर और बनावेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। इसमें कोई मुंझ हो तो पूछ सकते हो। यह तो जरूर है मैं आत्मा हूं। बाप बच्चों को ही कहते हैं जो ब्राह्मण बने हैं दूसरे को नहीं कहेंगे। दूसरों से बात नहीं करेंगे। बच्चे ही प्रिय लगते हैं। हरेक बाप को अपने बच्चे ही प्रिय लगते हैं। दूसरे को भल बाहर से प्यार करेंगे परन्तु बुधि में है यह हमारे बच्चे नहीं हैं। मैं तो बच्चों से ही बात करता हूं। क्योंकि बच्चों को ही पढ़ाना है। बाकी बाहर वालों को पढ़ाना तुम्हारा काम है। वह तो बहुत ही माथा खपाते हैं। कोई 6 मास, कोई आठ मास माथा खपाते हैं। समझते ही नहीं। कोई तो झट समझ जाते हैं। कोई थोड़ा समझ परी पहन कर चले जावेंगे। फिर जब देखेंगे यहां तो बहुत वृधि हो रही है तब आवेंगे। समझेंगे यहां तो दिन प्रति दिन वृधि को पाते रहते हैं। देखें तो सही। तुम यही समझावेंगे बाप सभी आत्माओं को वा बच्चों को कहते हैं मुझे याद करो। सभी आत्माओं को पावन कर्ता वह बाप ही है। वह कहते हैं मेरे सिवाय और कोई को भी याद न करो। मेरे अव्यभिचारी याद रखो। तुम्हारी आत्मा पावन बन जावेगी। पतित-पावन मैं एक ही हूं। मेरी याद से ही आत्मा पवित्र बनेगी। इसलिए कहते हैं बच्चे मामेकं याद करो। तुम्हारा बापू जी भी कहते हैं पतित-पावन ·· लिबरेटर। पतित राज्य से लिबरेट करते हैं। कहां ले जाते हैं? शान्तिधाम और सुखधाम। मूल बात है ही पावन बनने की। 84 का चक्र समझाना भी बहुत सहज है। चित्र देखने से ही निश्चय बैठ जाता है। इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं म्युजियम आद खोलो भभके से। तो मनुष्यों को भभका खैंचेगा। बहुत ही आवेंगे। तुम यही सुनावेंगे हम बाप की श्रीमत पर यह बन रहे हैं। बाप कहते हैं मामेकं याद करो और दैवी गुण धारण करो। बैज तो जरूर साथ में होना चाहिए। सिटल वाला बैज इतना काम का नहीं है। जितना वह। क्योंकि उन में कृष्ण प्रिन्स है। तुम जानते हो हम बैगर टू प्रिन्स बनेंगे। पहले तो कृष्ण बनेंगे ना। जब तक कृष्ण न बने तब तक ना0 बन न सके। बच्चे से बड़ा हो तो नारायण नाम मिले। इन में दोनों ही चित्र हैं। तुम यह बनते हो। अभी तुम सभी बैगर बने हुये हो। यह ब्राह्मण ब्राह्मणियां (ब्रह्माकुमारियां) सभी बैगर्स हैं। इन पास कुछ भी नहीं हैं। बगर अर्थ जिनके पास कुछ भी नहीं हैं। तुम बच्चों पास कुछ भी नहीं है। कोई2 को बैगर नहीं कहेंगे। यह (बाबा) तो है सब से बड़ा बैगर। इसमें पूरा बैगर बनना होता है। गृहस्थ व्यवहार में रहते आसक्ती तोड़नी होती है। तुम ने अनायास ही ड्रामा अनुसार आसक्ती तोड़ दी है। जो निश्चय बुधि से जानते हैं हमारा जो कुछ है वह बाबा को दे दिया। कहते भी है ना हे भगवान आप ने जो कुछ दिया है वह आप का ही है। हमारा नहीं है। वह तो हुआ भक्ति मार्ग। अभी बाप समझाते हैं तुम भक्ति मार्ग में कहते थे। उस समय तो शिव बाबा दूर था। अभी तो शिव बाबा बहुत ही नज़दीक है। सामने उनका बनना होता है। तुम कहते हो बाबा। बाबा। बाबा के शरीर के को नहीं देखना है। बुधि चली जाती है ऊंपर। भल लोन लिया हुआ शरीर है। परन्तु तुम्हारी बुधि में है हम शिव बाबा से बात करते हैं। यह तो किराया पर लिया हुआ रथ है। उनका थोड़े ही

यह भी जरूर है जितना बड़ा आदमी होगा तो किराया भी बहुत मिलेगा। मकान मालिक देखेंगे राजा मकान लेते हैं तो एक हजार किराया का 4हजार बोल देंगे। क्योंकि समझते हैं यह तो धनवान हैं। राजा लोग कब बोलेंगे नहीं कि यह जास्ती लेते हो। नहीं। उनको पैसे आद की प्रवाह ही नहीं रहती। वह खुद कब कोई से बात नहीं करते हैं। प्राईवेट सेक्रेट्री ही बात करते हैं। बीच में वह भी 800- 1000 खावेंगे। राजा कोई बात नहीं करते। आजकल तो रिश्वत बिगर काम नहीं चलता हैं। बाबा तो बहुत ही अनुभवी है। वह लोग बड़े ही राजल होते हैं। चीज़ पसन्द की बस। फिर सेक्रेट्री को कहेंगे इन से फसल कर ले आओ। महाराजाओं पास माल ले जाओ। पैसे खोल कर देंगे। महाराजा महारानी दोनो ही आवेंगे। जो चीज़ पसन्द होगी उन पर सिर्फ अंगुली से ईशारा करेंगे। बस। उठावेंगे सेक्रेट्री। उनको क्या प्रवाह है दाम आद पूछने की। सेक्रेट्री बात-चीत कर बीच में अपना भी हिस्सा निकाल लेते हैं। कोई2 राजाएं साथ में ही पैसा ले आते हैं। सेक्रेट्री को कहेंगे इनको पैसा दे दो। बाबा तो सभी के साथ सम्बन्ध में आये हैं। जानते हैं कैसे2 उन्हों की रूट चलती है। उनके सेक्रेट्री पास बेग रहती है। चीज ले आओ पैसा दिया। जैसे कि खज़ांची रहते हैं राजाओं की। जैसे यहां भी शिव बाबा का खज़ांची है ना। यह तो ट्रस्टी है। बाबा का इनमें कोई मोह नहीं हैं। इसने अपने पैसे में ही मोह नहीं रखा सभी शिव बाबा को दिया तो फिर शिव बाबा के धन में मोह कैसे रखेंगे। यह है ट्रस्टी। जिनके पास धन रहता आजकल गवर्मेन्ट कितना जांच करती है। विलायत से आते हैं तो एकदम अच्छी रीत जांच करते हैं। हीरे आद कैसे मनुष्य छीपा कर ले आते हैं। तुम सुनो तो वन्डर खाओ। तो गवर्मेन्ट भी कच्ची नहीं है। पूरी जांच रखती है। अगर कोई रिश्वत दे देते हैं तो आफिसर को तो फिर वह युक्ति सेछोड़ देते हैं। यह है ही ऐसी दुनिया। अभी तुम बच्चे जानते हो कैसे बेगर बनना होता है। कुछ भी याद न आये। आत्मा अशरीरी बन जाये। इस शरीर को भी अपना न समझे। अशरीर। हमारा कुछ न रहे। ऐसा बनना है। बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझो अभी तुमको वापस जाना है। तुम जानते हो बेगर कैसे बनना होता है। शरीर से भी ममत्व टूट जाये। आप मुये मर गई दुनिया। यही मंजिल है। समझते हो बाबा बरोबर ठीक कहते हैं। अभी हमको वापस जाना है। शिव बाबा को तो तुम जो कुछ देते हो उसका फिर रिटर्न में दूसरे जन्म में मिल जाता है। इसलिए कहते हैं यह सभी कुछ ईश्वर ने दिया है। आगे जन्म में ऐसा कुछ कर्म अच्छा किया है जिसका फल मिला है। शिव बाबा रखता किसको नहीं है। बड़े राजाएं जमीन्दार लोग जो होते हैं उनको नज़राना भी देते हैं। फिर कोई राजाएं नज़राना लेते हैं, कोई नहीं लेते हैं। वहां तुम कुछ भी दान-पूण्य आद नहीं करते हो। क्योंकि वहां तो तुम्हारे पास बहुत पैसे हैं। दान किसको करेंगे। गरीब वहां होते ही नहीं। तुम बेगर से प्रिन्स बन जाते हो। वहां है ही सभी शाहुकार। भिखारी फकीर आद वहां होते ही नहीं। तुम ही फकीर से अमीर, अमीर से फकीर बनते हो। कहते हैं इनको सिहत बख्सो। कृपा करो। यह करो। आगे शुरू में सभी शिव बाबासे मांगते थे। फिर व्यभचारी बन गये तो सभी के आगे जाते रहते हैं। शंकर के आगे भी जाकर कहते हैं झोली भर दो... अभी धतूरा खाने खाने वाला, भांग पीने वाला वह फिर क्या झोली भरेगा। यह सभी बातें तुम अभी समझते हो। कितना नान-सेन्स पत्थर बुधि आसुरी तुच्छ बुधि मनुष्य हैं। गायन भी है पत्थर बुधि से पारस बुधि। तो तुम बच्चों को खुशी बहुत रहनी चाहिए। गायन भी है अति ईन्द्रियसुख गोप-गोपिकाओं से पूछो। किसको फायदा बहुत होता है तो बहुत खुश होते हैं। तो तुम बच्चों को भी बहुत खुशी होनी चाहिए। तुमको 100% खुशी थी। फिर 75% घटती गई। अभी तो कुछ भी है नहीं। बेहद की बादशाही। फिर होते हैं अल्प काल के लिए हद की राजाई। अभी बिरला के पास कितनी दौलत मिलकीयत है। मंदिर बनाते हैं। इससे कुछ नहीं मिलता। गरीबों को थोड़ी कुछ देते हैं। मंदिर बनाया जहां मनुष्य आकर माथा टेकेंगे। हां गरीबों को दान देते हैं तो उसका रिटर्न में मिल सकता है।

धर्मशाला बनाते हैं तोबहुत मनुष्य जाकर वहां विश्राम पाते हैं तो दूसरे जन्म में अल्प काल लिए सुख मिल जाता है। कोई हास्पीटलबनाते हैं तो सभी अल्प काल लिए सुख मिलता है। एक जन्म के लिए। यह तो बेहद का बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। इस पुरुषोत्तम संगम युग की बहुत महिमा है। तुम्हारी भी बहुत महिमा है। जो तुम पुरुषोत्तम बनते हो। तुम ब्राहमणों को ही आकर भगवान पढ़ाते हैं। वही ज्ञान सागर मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष का बीज रूप है। सारी ड्रामा के आदि मध्य अन्त का राज़ समझाते हैं। तुम से पूछेंगे क्या तुमको पढ़ाते हैं। बोलो क्या यह भूल गये हो, गीता में भगवानुवाच है ना मैंतुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। इनका अर्थ भी अभी तुमसमझते हो। पतित राजाएं, पावन राजाओं की पूजा करते हैं। इसलिए बाप कहते हैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। यह ल०ना० स्वर्ग के मालिक थे ना। स्वर्ग के देवताओं को द्वापर कलियुग में सभी पूजन नमन करते हैं। इन बातों को भी अभी तुम समझते हो। भक्त लोग कुछ भी समझते थोड़े ही हैं। वह तो सिर्फ शास्त्रों की कहानी पढ़ते सुनते रहते हैं। बाप कहते हैं तुम जो गीता आधा कल्प से सुनते आये हो उस से कुछ प्राप्ती हुई। पेट तो कुछ भी भरा नहीं। अभी तुम्हारा पेट भर रहा है। तुम जानते हो पार्ट एक ही बार चलता है। खुद भगवान कहते हैं मैं इस तन में प्रवेश करता हूं। ऊपरसे डायरेक्शन देंगे क्या। कहते हैं मैं सम्मुख आता हूं। अभी तुम सुन रहे हो। यह ब्रहमा भी कुछ नहीं जानते थे। अभी जानते जाते हैं। बाकी पानी गंगा की पावन करने वाली नहीं है। यह है ज्ञान की बात। तुम जानते हो बाप सम्मुख बैठे हैं। तुम्हारी बुधि में अभी ऊंपर में नहीं आवेगा। यह रथ जहां होगा वहां ही तुम याद करेंगे। बम्बई जावेंगे कहेंगे इस समय शिव बाबा वहां है। शिव बाबा फ्लाने जगह गया है। यह है उनका रथ। यह है ताम्बे की वा लोहे की डब्बी। उनको बाबा बूट भी कहते हैं। डबलीभी भी कहते हैं। इस डबली में यह हीरा है। कितनी फर्स्ट क्लास चीज़ है। इनको तो रखना चाहिए सोने की डबली में। गोल्डेनएजेड डबली में। परन्तु बाबाकहते हैं मैं गोल्डेन डबली में कब प्रवेश नहीं करता हूं। मैं आता ही हूं सेवा करने धोबी बन कर। कहते हैं ना धोबी से घर से गई छू। उनको कहते छू=मंत्र मंत्र। छू मंत्र से सेकण्ड में जीवन मुक्ति। इसलिए उनको जादूगर भी कहते हैं। सेकण्ड में निश्चय हो जाता है। हम यह बनेंगे। यह बातें तुम अभी प्रेक्टीकल में सुनते हो। पहले जब सत्य नारायणकी कथा सुनते थे तो यह समझते थे क्या। उस समय तो कथासुनते विलायत, स्टीमर आद याद रहता था। सत्यना० की कथा सुनकर करोड़ों मुसाफिरी पर जाते थे। वह तो फिर लौट आते थे। बाप तोकहते हैं तुमको इस छी छी दुनिया में लौटना ही नहीं है। भारत अमरलोक, स्वर्ग, देवी देवताओं का राज्य था। यह ल०ना० विश्व के मालिक थे ना। इनके राज्य में पवित्रता सुख शान्ति थी। दुनिया भी यह मांगती है विश्व में शान्ति हो। सभी मिल एक हो जाय। अभी इतने धर्म मिल करएक कैसे हो सकते हैं। हरेक काधर्म अलग, फिचर्स अलग2 सभी एक कैसे होंगे। वह तो है ही शान्तिधाम। और सुखधाम। वहां एक धर्म एक राज्य होता है। दूसरा कोई धर्म ही नहीं जो ताली बजे। उसको विश्व मेंशान्ति कहा जाता है। अभी तुम बच्चों को बाप पढ़ा रहे हैं। यह भी जानते हैं सभी बच्चे एक रस नहीं पढ़ते हैं। नम्बरवार तो होते ही हैं। यह राजधानी स्थापन हो रही है। बच्चों को कितना समझदार बनाया जाता है। यह है ईश्वरीय युनिवर्सिटी। भक्त लोग समझते नहीं। अनेक बार सुना भी है भगवानुवाचक्योंकि गीता है हो भारतवासियों का धर्म-शास्त्र। गीता की तो अपरम-अपार महिमा है। सर्व शास्त्रमई शिरोमणी गीता शास्त्रहै। श्री अर्थात श्रेष्ठ। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ पतित-पावन सदगति दाता है ही एक भगवान। जो सभी आत्माओं का बाप है। तब तो सभी कहते हैं ब्रदर्सहुड। वी आर आल ब्रदर्स। हम सभी आत्माएं भाई2 हैं। भारतवासी अर्थ को समझते ही नहीं हैं। बेसमझी से सिर्फ कह देते हम सभी भाई2 हैं। अभी तुमको बाप ने समझाया है हम आत्माएं भाई2 हैं। हम शान्तिधाम के रहने वाले हैं। यहां पार्ट बजाते2 हम बाप को भी भूल गये हैं। तो घर को भी भूल गये हैं। जो बाप भारत को सारे विश्व को का राज्य

देते हैं। उनको भूलगये। यह भी बाप बैठसमझाते हैं। यह मनुष्य सृष्टि रूपी , ड्रामा का चक्र कैसे फिरता है जिसको भक्त लोगों ने लाखों बर्ष लगा दिया है। कलियुग की आयु कहते हैं 40हजार बर्ष हैं। अजन अभी शुरु हुआ है। बाप कहते हैं देखो बच्चे कितने मूर्ख हैं। कितना घोर अंधयारे में हैं। क्योंकि रावण राज्य है ना। कुछ भी समझते नहीं। एक भी मनुष्य नहींजिसको ड्रामा के आदि मध्य अन्त का नालेज हो। मनुष्य को ही ड्रामा को तो जानना चाहिए ना। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनको भी कोई नहीं जानते हैं। बाप कहते हैं तुमकोकितना धनवान विश्व का मालिकब बनाते हैं, तुम फिर राजाई गवां देते हो। वहां है ही सभी क्षीर खण्ड। यहां माया के राज्य में सभी लूनपानी हैं। खान-पान कितना गंदा है। इनको कहा जाता है पतित दुनिया। पावन दुनिया थी सत्-युग। जहां देवतायें थे। फिर पावन से पतित कौन बनाते हैं यह भी समझ की बात है ना। तुम्हारे सिवाय कोई भी नहीं जानते। ऐसा विश्व का महाराजा सिवाय बाप के कोई बना न सके। इन्हों को बाबा ने कैसे बनाया यह भी तुम अभी जानते हो। राज्य पाया फिर कैसे गंवाया यह भीतुम जानते हो। इस चक्र को जानने सेतुम यह बन जाते हो। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह पढ़ाई है। भक्ति को पढ़ाई नहीं कह सकते। उसमें एमआबजेक्ट कुछ भी है नहीं। इतने वेद-शास्त्रगीता आद पढ़ते हैं परन्तु उन से मिलेगा क्या। भगवानुवाचः मैंराजयोग सिखलाता हूं। राजाओं का राजा बनाता हूं। परन्तु वह कब आया थायह किसको पता नहीं। कल्प को आयु ही लम्बी कर दी है। एक तो कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। भगवान तो एक होता है। हां ऐसे कहेंगे भगवान ने पढ़ा कर ऐसा भगवान-भगवती बनाया। भगवान ने ऐसा बनाया इसलिए उन्हों को भी भगवान भगवती कह देते हैं। परन्तु बाप कहते हैं भगवान एक को ही कहा जाता है। यह तो देवी देवतायें हैं। उनको भगवान नहीं कहेंगे। यह है डिटीज़्म। आदी सनातन देवी देवता धर्म किसने स्थापन किया यहकिसको भी पता नहीं है। वह समझते हैं कृष्ण ने किया। परन्तु कृष्ण की आत्मा भी अभी पढ़ रही है। जिसमें फिर बाबा ने प्रवेश किया है। तो यह फिर वह बन जावेंगे। तुम उनके डिनायस्टी के देवता बन जाते हो। उनको कहा जाता है विश्व की युनिवर्सिटी। सारे विश्वको सदगति करने वाला एक ही बाप है। कैसे सारा दुनिया सदगति को पाती है यह भी तुम ही जानते हो। तुम तो चले जाते हो सतयुग सुखधाम में। वहां बहुत थोड़े रहते हैं। बाकी सभी शान्तिधाम में चले जाते हैं। फिर वहां से नम्बरवार आते रहेंगे। आत्मायें सभी शरीर छोड़ कर चली जाती है। हर 5000 बर्ष बाद तुम फिर से यह बनते हो। इसको कहा जाता है ज्ञान। यह ज्ञान कोई भी दे न सके। एक बाप द्वारा ही मिलता है। तुम्हारा टीचर कौन है ? शिव बाबा। हां तुम कहेंगे हमको वह शिव बाबा ही पढ़ाते हैं। उस एक को ही कहा जाता है सतगुरु। बाकी गुरु लोग तो ढेर के ढेर हैं। यह तो है पढ़ाई। भक्ति-मार्ग ही अलग है। सब से जास्ती भक्त तो यह था। तुम भी थे। जो बहुत2 भक्ति करते हैं फल भी उनको देते हैं। हम ही पुराने भक्त हैं। पहले एक शिव की पूजा करते थे। तत त्वम। तुमको ही शिव बाबा ने राज-भाग दिया था। फिर दे रहे हैं। जिसने भक्ति नहीं की होगीवह इतना पढ़ेंगे भी नहीं। जास्ती पढ़ने लग पड़े तो समझो इसने भक्ति जास्ती की है। यह ऊंच पद पावेंगा। रग देखनी पड़ती है। गाते भी हैं माला फेरते युग पास हो गये मन मन का मीतसच्चा बाप न मिला। आधा कल्प माथा मारा। पहले शिव की भक्ति कीफिर देवताओं की की। अभी तो पानी आद की भी पूजा करते रहते हैं। बाप कहते हैं पानी में स्नान करने से पावन थोड़े ही बनता। जिनको गुरु किया वह भी पापात्मायें। बाप कहते हैं अभी बीती सो बीती। यह पुरानी दुनिया न जीती देखो। यह सन्यासी आद फिर भी अपने समय पर आवेंगे। जब शंकराचार्य आकर धर्म की स्थापना करेंगे। सतयुग में तो आ न सके। वह राजयोग सिखला न सके। वह है ही निवृति मार्ग वाले। पवित्र प्रवृति मार्ग का ज्ञान दे न सके। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुड मार्निंग रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।